अध्याय : प्रथम

हरिराम मीणा व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी की मिट्टी और संस्कृति से गहराई से जुड़े तथा प्रतिष्ठित उपन्यासकार व आदिवासी चिंतक लेखक हरीराम मीणा आदिवासी समाजपरक लेखकीय परम्परा के रचनाकार है। यद्यपि इनका कथा लेखन परिवेश राजस्थान से संबंध रखता है। लेकिन चित्रण इतना विस्तार लिए हुए है कि वह अंचल का चित्रण होते हुए भी आंचलिकता की बजाए पूरे भारतीय आदिवासी परिवेश से साक्षात्कार करा देता है। उनका जीवन राजस्थानी आदिवासी समाज और संस्कृति से रंगा जीवन है जिसमें आदिवासी समाज की विवशता, दुःख और आर्थिक परिस्थितियों में जकड़ा लबादा है। जिसे परत दर परत खोलने पर अजीब सा जीवन दिखता है।

आदिवासी जीवन, समाज और संस्कृति के विषय पर लेखनी चलाने वाले हरिराम मीणा का जन्म मई, 1952 ई. को राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले के बायनवास नामक ग्राम में हुआ था। जन्म तिथि को लेकर अनिश्चितता हैं जिसे वे अपनी एककहानी से जोड़कर बताते हैं। सवत् दो हजार तेरह को जब उनकी नानी की मृत्यु के बारहवें दिन के दो-चार दिन बाद और उसदिन बहुत जोरदार आँधी-वर्षा हुई। उस समय के बारे में पूछने पर बताया शुक्रतारा के आसमान पर चढ़ जाने के बाद सर्दी का मौसम था और दीपावली के बाद का समय था। जिसमें औरते चक्की पीसने जल्दी उठ जाया करती हैं।

"संवत दो हजार तेरह में जब भौरी नाना 'नानी' परी बीका बारह बामणन (बारहवाँ) के तीन-चार दिन बाद थारो जन्म हुयो हो, और जावले के बा रात सू आँधी-मेह आयो हो ..... ए भाया, चाखीन उरयाँ को टेम हो, अर तारो (मोर यानी कि शुक्र तारा) याथान

तक धंड आयो हो, अब घड़ी का हिसाब सू अंदाज लगा ले ..... दीपावली निकलगी और थोड़ी बहुत ठंड पड़वा लगी दी।''[1]

इस प्रकार बताने के बाद जब पण्डित जी पंचाग की गणन की तो तिथि 15 नवम्बर 1954 को निश्चित हुई।

हरिराम मीणा के परिवार में पिताजी ने तीसरी कक्षा तक अध्ययन किया था।उनको आदिवासी समाज में रहते हुए कक्षा तीन पढ़ाई कीए हुए पिताजी का सानिध्य मिला। माताजी अनपढ़ थी। घर परिवार चलाने का एकमात्र सहारा कृषि कर्म ही था।

हरिराम मीणा जी का परिवार मध्यम आकार का परिवार था। आजीविका का साधन जमीन ही थी। बचपन बड़ा कठिनता में बीता। पाँच भाई-बहन थे। उनकी परिवरिश बड़ी कठिनता से हो रही थी। पढ़ाई का ज्यादा माहौल नहीं था। परिवार में सबसे छोटे थे। पिताजी ने अपने पुत्र को आगे की शिक्षा दिलानी चाही। लेकिन धनाभाव था। हरिराम पढ़ना चाहते थे। इसलिए पिताजी ने किसी से कर्ज लिया ताकि पुत्र की पढ़ाई हो सके।

प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा अपने गाँव के प्राप्त की। उच्चमाध्यमिक स्तर की शिक्षा निकटवर्ती कस्बे गंगापुरसिटीसेअर्जितकी। स्नातक स्तर की शिक्षा करौली के राजकीय महाविद्यालय से आरंभ की जहाँ प्रथम दो वर्ष तक अध्ययन करते रहे। अब नजरिया में कुछ बदलाव आया और राजधानी जयपुर चले गए। जहाँ से स्नातक की हिन्दी साहित्य, इतिहास, नागरिक शास्त्र के साथ 1973 ई में परीक्षा उत्तीण की।शिक्षा के प्रति रूचि थी।इसलिए आगे शिक्षार्जन हेतु मन बनाया। स्नातकोत्तर के लिए वहीं राजनीतिक विज्ञान विषय में की परीक्षा देकर 1975 में उपाधि प्राप्त की।

मीणा जी का विवाह 1968 ई में अक्षया तृतीया के दिन हुआ। सगाई के तो कब और कैसे हुई आजतक वास्तविक रूप से जानकारी में नहीं। लेकिन कांचे खेल से बुलाकर किसी

अजनबी ने मुझे देखा। पर मैं झिझका परिवार वालो द्वारा समझाने के बाद मैं उनके निकट आया। उन्होंने सिर पर हाथ फेरकर आर्शिवाद दिया और एक रूपये का नोट दिया। उन्होंने इस नोट को अपनी जीजी को दे दिया। अब घर में कुछ देखभाल ठीक होने लगी। कानों में चाँदी के कुंडल डाले गए। अच्छे कपड़े भी पहनने को मिले। विवाह के दिन भाभियों ने अलग-अलग रंगों से सजाया। पेंट कमीज के साथ गंगापुर से लाल के रंग जूते लाए गए। न घोड़ी न बैंड़-बाजा एकदम साधारण तरीके से शादी हुई। परिवार नाते-रिश्तेदारों ने भोजन किया। यह सामूहिक भोज था। यही सामूहिकता आदिवासी समाज की पहचान है जिस पर वह चलता आया है। सरकारी नौकरी में रहते हुए यदि किसी घरवाली के बारे में से पूछना होता तो बोलते थे कि 'घरवाड़ा खां है' तो परिवार के सदस्यों की जानकारी दे दी जाती लेकिन पत्नी के बारे में कोई नही बताता।

"भायो गाय चरावा गियो, जीजी पागी भरबा गयी, काको खेतन में है, काकी बाजार गई, भैण-हाबा कूँ गयी, थारो भाई सिल्याण में ताश खेल रहयो होयेगो वगैरा.....।"[2]

बचपन में गरीबी को नजदीक से देखा था। परिवार में आय को कोई दूसरा स्त्रोत नहीं था। पढ़ाई के साथ सरकारी नौकरी के प्रयास करना शुरू कर दिए। अनुसूचित जाति जनजाति योजना अन्तर्गत समाज कल्याण विभाग में लगभग 45 दिन तक चतुर्थ श्रेणी का कार्य किया। फिर 'सेंटरल बैंक ऑफ इण्डिया' में तीन माह तक अस्थाई लिपिकीय सेवाएं दी। फिर 'पंजाब नेशनल बैंक' मैं स्थायी नौकरी मिली। इसके बाद 1976 ई में भारतीय रिजर्व बैंक की परीक्षा उत्तीर्ण की और स्थायी नौकरी मिली। वही पर संगीत से मेलजोल हुई। 1975-78 तक मनमोहन भट्ट साहब से गिटार की शिक्षा ग्रहण की। फिर राजस्थान पुलिस सेवा में चयन हो गया और भरतपुर में नौकरी मिली। मेहनत और भाग्य ने गजब तालमेल बैठाया और पदौन्नति होती रही 1997 से 2012 तक भारतीय पुलिस सेवा में नागौर जिले के पुलिस अधीक्षक पद

कार्य आरंभ किया। विभिन्न स्थलों पर सेवा देते हुए राजस्थान सरकार के सम्पूर्ण पुलिस विभाग को संभालते हुए सेवा निवृत हुए।

2003 ई को सूरीनाम में आयोजित सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में राजस्थान के आठ सदस्यों के साथ 'विश्व प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित' जयपुर लिटरेरी फेस्टीवल में निरन्तर सक्रिय रहे और सम्मान मिलता रहा। भारत भर में भ्रमण किया विशेषकर आदिवासी इलाकों का। विश्व में नेपाल हालैण्ड व सूरीनाम का भी भ्रमण किया।

अखिल भारतीय आदिवासी साहित्यिक मंच के अध्यक्ष रहे, कुछ गैर सरकारी संगठनों से जुड़े रहे, राजस्थानी साहित्य अकादमी की कार्यकारिणी में शामिल थियेटर्स एवं कम्यूनिकेशन के सदस्य, हैदराबाद विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्राफेसर रहे (2003), राजीव गाँधी जनजातीय विश्व विद्यालय के प्रबंधन बोर्ड में राज्यपाल द्वारा नियुक्त सदस्य आदि कई पदों पर कार्य किया।

अपने लेखन के साथ पत्रकारिता में भी लेखनी चलाई आदिवासी साहित्यिक पत्रिका 'अरावली उदघोष' का सद सम्पादन में हाथ बढ़ाया। रमणिका फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'युद्धरत आम आदमी 'व दस्तक व अकार पत्रिकाओं के आदिवासी विशेषांकों के सम्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की ओर 'रूबरू' और आईना जैसे सीरियलों के लिए और ब्रिटिश कालीन भारत के आदिवासी संघर्षों की दास्तानों पर विशेष शोध कार्य किया।"धूणीतपेतीर पर बनी डॉक्यूमेंट्री जंगल में जलियावाला को इंटरनेशनल फिल्म फेस्टीवल 2011 में सर्वोच्च अवार्ड दिया गया।"[3]

इनके उपन्यास 'धूणी तपे तीर' का अंग्रेजी व 'जंगल-जंगल जलियावाला' यात्रावृतांत का पंजाबी में अनुवाद हुआ और अंतराष्ट्रीय महात्मा गाँधी हिन्दी विश्वविद्यालय के 2009 कार्यक्रम 'हिन्दी समय' में मीणा जी को स्थान मिला।

दलित और आदिवासी समुदाय में जनजागृति लाने वाले हरिराम मीणा जी को सन् 2000 को डॉ. अम्बेडकर अवार्ड से सम्माणित किया गया। महापंडित राहुल सांकृत्यापन पुरस्कार सन् 2007 को जो केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का अत्यन्त प्रतिष्ठित पुरस्कार, 16/02/2009 को प्रदान किया गया। देश के प्ररतिष्ठित विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में इनकी पुस्तकें/पुस्तकीय अंश सम्मिलित किय गये हैं। जैसे जयनारायण व्यास विश्व विद्यालय जोधपुर, आई.जी.एन.टी. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में मीणा जी की पुस्तक सम्मिलित है।

हरिराम मीणा का जन्म अभावों में बीता था। जिंदगी में हर एक कमी के दुःख को झेला-समझा। गरीबी से छूटकारा पाने और दुःखो से बहार निकलने का एकमात्र रास्ता कर्मशील जीवन ही था। इसलिए भाग्य के बजाए कर्म में ज्यादा विश्वास किया। प्रत्येक कार्य को कर्तनिष्ठा के साथ पूर्ण किया। उसी का परिणाम था अभावों से भरे जीवन को जीते हुए पुलिस महानिदेशक पद तक पहुँचे। पुलिस की नौकरी वैसे भी बड़ी कठिन व सजक रहने की होती है। घर-परिवार से दूर दिन-रात की बिना परवाह किए तबादलों भरे जीवन से समझौता करना पड़ता है। पुलिस की नौकरी और उसके साथ साहित्यिक अभिरूचि बड़ा जौखिम भरा काम है। साहित्य तो पूरा ध्यान माँगता है। अतः कर्तत्व और निष्ठा को भूलकर साहित्य लिखा ही नही जा सकता। उसमें झूठ-झपट और ना नुकुर का तो प्रश्न ही उठता है।

रघुवीर सहाय की पंक्तियों में कह सकते हैं-

हम तो 'सारा का सारा' लेगे जीवन

'कम से कम' वाली बात न हम कहिए।

आदिवासी समुदाय के बारे में एक धारणा बनी हुई है कि यह आदिय प्रकृतियों में जीते हैं लेकिन आज समय बदल गया। आदिवासी समुदाय विज्ञान और तकनीकी के साथ

मेलजोल बढ़ा रहे है। हाँ इतना अवश्य है कि सम्पूर्ण आदिवासी समुदाय अभी इसमें सम्मिलित नहीं है। इसके लिए हम सब को आगे आना होगा।

उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ना होगा। इसके लिए उनके पारम्परिक संस्कारों पर बिना कुठाराघात किए मातृभाषा में शिक्षित करना होगा तभी वे परिवर्तन के साझेदार होगे अन्यथा नहीं।

हिन्दी में अपनी लेखन यात्रा के अन्तर्गत आदिवासी सामाजिक जीवन के लगभग प्रत्येक पहलू पर अपनी लेखनी चलाई। उसमें छीपी गंध का पहचाना, वहाँ के लिजलिजेपन को बखूबी लफ्जों में बांधा। इस दृष्टि से आदिवासी समाज का शायद ही कोई पक्ष उनकी पैनी दृष्टि से ओझल रहा हो। निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक भोली-भाली जनता से लेकर राजनेता तक शुद्र-आदिवासी से लेकर ब्राहमण तक किसान से लेकर सेठ साहूकार तक चपरासी से लेकर अफसर तक पुरानी पीढ़ी से लेकर आधुनिक पीढ़ी तक के प्रत्येक पथ पर रचनाकार ने अपनी वाणी मुखरित की है।

आदिवासी लेखन व विमर्श में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हरिराम मीणा ने पद्य व गद्य दोनों विधाओं में लिखा। आपके समस्त साहित्य को अध्ययन सुविधा हेतु निलरूप में विभाजित किया गया है-

अ. पद्य साहित्य

ब. गद्य साहित्य

1. कथा साहित्य
2. कथेत्तर साहित्य

'हाँ चाँदमेरा है' नामक कविता संग्रह 1999 ई में प्रकाशित हुआ। इस काव्य संग्रह में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपी कविताओं को संकलित किया गया। इन कविताओं में

रचनाकार को सृजनात्मक क्षमता और रचना धर्मी मस्तिष्क और खुले भावुक हृदय का परिचय दिया। इस कव्य संग्रह ने रचनाकार को साहित्यिक संसार में कवि के रूप में मुकम्मल पहचान दिलाई। इस पुस्तक की सारगर्थिक रचनात्मकता का सुखद परिणाम यह रहा कि राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार 'मीरा पुरस्कार' हेतु इसे चुना गया। यह एक पुस्तक के साथ आदिवासी कवि की मनादेशा व चिंतन का भी सम्मान था जिसे सभी ने स्वीकार किया।

साहित्य और इतिहास का छात्र होने के नाते कवि मन तीव्रगति आगे बढ़ता है। भारतीय ऐतिहासिक प्ररिप्रेक्ष्य को समझने की कोशिश की पौराणिक आख्यानों को समझा। मियकीय गाधाओं समझा। इसी क्रम में भारतीय संस्कृत साहित्व के महाकवि कालिदास के वैचारिक धरातल को समझने का प्रयत्न किया। उनकी ख्याति प्राप्त रचना 'मेघदूत' को पढ़ा और समझा। इसकी मिथकीय अवधारणा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याखित किया। मीणा जी की दूसरी पद्य रचना 'सुबह के इंतजार में' नाम से है। जिसे 'क्षर शिल्पी' प्रकाशन वालों ने छापा है। यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है।

'रोया नहीं था यक्ष' के नाम से छपवाया। उसी क्रम में वर्ष 2000 से 2006 के बीच लिखी और छपी। कविताओं का इसरा संकलन 'सुबह के इंतजार में' शीर्षक से वर्ष 2006 में प्रकाशित हुआ है।

गोविन्द गुरू अपने नैतिक बल व जिज्ञासु प्रवृति के कारण आदिवासी समाज में अपना जागरती आन्दोलन का शुभारम्भ करते हैं। इन्होंने अपने बचपन के मित्र कुरिया और आदिवासी नायक पूंजा के साथ सामजस्य बैठा जनजागृति आन्दोलन को क्रमिक गति दी। इन्हीं लोगों के सहयोग संपसभा का गठन किया। जिसके माध्यम से लगभग तीन दशकों तक आदिवासियों जागृतिमय चेतना भरते रहे। आदिवासी समाज मेंव्याप्त कुरूतियों और बुराइयों

के उन्मूलन हेतु जागृतिक अभियान आरंभ किए। विशेषकर मदिरा सेवन से पाप्त दुरूपरिणामों से बचाने और शारीरिक स्वच्छता प्राप्त करने के लिए व्यापक स्तर पर सफल अभियान चलाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि शराब की खपत में व्यापक स्तर पर गिरावट आई। बाँसवाड, रियामत में इसका सीधा असर 18,740 गैलन से घटकर 5,154 गैलन के रूप में दिखाइ्र देता है। साथ ही प्रतिदिन स्नान करना व हवन आदि में हिस्सा लेना आरंभ हुआ। आदिवासियों द्वारा उन्होंने आदिवासी अंचलों की यात्रा करते हुए अन्याय अत्याचार के विरूद्ध मुहिम चलाने हेतु निष्ठावान समर्पित कार्यकर्ताओं का संगठित स्वरूप खड़ा किया। आस्था और अधिकारों के प्रति चेत्य समूह ने 1913 ई को आरपार की लड़ाई छेड़ दी। रणनीतिक मानगढ़ पहाड़ी पर तकरीबन ढाई हजार आदिवासियों का जनसैलाब उमड़ा। ब्रिटानी हुकूमत ने एकत्र आदिवासी समाज को कुचलने की योजना बनाई। तयशुदा रणनीति में रियायती सेना के साथ अपनी सशस्त्र सात कम्पनियाँ वहाँ भेजी। शांत आयोजन को बेरहमी से कुचला गया। लगभग 1500 आदिवासियों की हत्या करते हुए 900 आदिवासियों सहित गोविन्द गुरू गिरफ्तार करलिए गये।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि गोविन्द गुरू ने आदिवासी समाज के लिए अपने जीवन काल में बहुत कुछ अच्छा करना चाहा। इस समाज की स्थिति और मनादेशा को समझा। जिससे उनके भीतरअन्तर्दृंद आरम्भ हुआ। अन्तर्दृंद के कारण उनमें प्रतिकार और प्रतिरोध की भावना प्रस्फूटित हुई। क्योंकि उन्होंने समझ लिया कि किसी स्थिति को बदलने के लिए प्रतिरोध आवश्यक है- उन्हीं के शब्दों में

"नहीं काका, ऐसा मत सोच जो भी हमारे पास है उसमें गुजारा करना तो अपनी जगह ठीक है, लेकिन ये राज के आदमी हम पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते हैं..... इनका विरोध हमें करना चाहिए ना? अगर ऐसी बातें न हो तो क्या हमारा जीवन सुधर जाएगा।"[4]

गोविन्द गुरू प्रतिरोध के साथ सरल हृदयी इंसान है जिनकी मूल प्रवृति धार्मिक है। दया और प्रेम, सहयोग और कर्तव्यनिष्ठा, नित्यकर्म गतिशील जीवन में विश्वास, संगठन में विश्वास, और आस्थामय जीवन आदि के द्वारा इनके व्यक्तित्व की विशेषता का उभारा गया है।

इतिहास के पनों में कुछ छूपा दिया जाता है। इसी छूपे हुए इतिहास को हरिराम मीणा ने सबके सामने प्रकट किया। सत्य को उजाकर किया कि शोषण करने वाला कायर होता है फिर भी सूझबूझ के शोषण करता है और शोषित द्वारा समझने व प्रतिरोध करने पर हिंसात्मक तरीकों को अपनाकर उसे समूल नष्ट करने का प्रयत्न करता है। जिसका स्पष्ट उल्लेख मानगढ़ हत्याकांड में हुआ है। लेकिन इसकी लौरूपी मूल चेतना को नष्ट करने के बाद भीवह राख में दबे अंगारों की भाँति चेतन रहती है। जिसमें सिमटे होते है उनके आचरणिक सद्गुणों से पुष्ट सभ्यता और संस्कृति उनका अदम्य साहस और शौर्य और मानव अस्तित्व और विकास को जिंदा रखने वाली प्रकृति के प्रति अपनत्व भाव। हरिराम मीणा का यह कथन अति सटीक है-

"मानगढ़ पर्वत पर यहाँ-वहाँ पड़े हताहतों के दरों के बीच दीपालय में रखे हुए दीपक की बाती के बुझ जाने के बावजूद वह गर्म थी और रातभर जली गोविन्द गुरू की धूणी की आग बुझी हुई थी। लेकिन राख के भीतर चिनगारियां दबी हुई थी।"[5]

हरिराय मीणा ने अपने साहित्यिक जीवन में दो कहानियाँ ही लिखी है। दोनों कहानियाँ आदिवासी-दलित चेतना से संबंध रखती है। इनकी पहली कहानी 'सांवड्या' के नाम से है। और दूसरी 'बोत्या' के नाम से है।

'सांवड़या' कहानी का मुख्य पात्र सांवड्या ही है। जिसके इर्दगिर्द सारा घटनाचक्र घूमता है। इस कहानी में चरित्र चित्रण को प्रधानता मिली है। साथ ही साथ आदिवासी समाज की आस्था और त्योंहार को चित्रित किया गया है।'सांवड्या' एक लघू जोत का मालिक है।

कहानी की कथावस्तु होली के त्योंहार मनाने की गतिविधियों से गति पाती है जिसमें मुख्य गतिविधि कुश्ती का दंगल है। जिसमें दिल्ली के पहलवान शामिल होते हैं। लक्ष्मीनारायण पटेल दंगल हेतु सांवड्या के नाम की घोषणा कर देते हैं। दंगल में दोनों पक्ष बराबर रहते हैं। इनाम भी बराबर प्राप्त होता है लेकिन किसान होने के नाते सांवड्या अपने खेत की प्रति चिंतित है और कहाँ जाकर काम में जुट जाता है। जीत को खुशी की बजाए खेत के कार्य पर ध्यान है। इनके चरित्र और चित्रित करते लिखते है-

"महेनत की भट्टी में तपा हुआ बदन लुहार के हथौड़े से तराशा हुआ सा एक अंग, अकूत ताकत भरी बलखाती माँसपेशियाँ किसी कठिन राह के लिए तैयार उसके पांव और आंटण पड़ी हथेलियाँ सांवड्या ने ललाट पर फेरी, दृष्टि को अंतिम बार इमली पर लटकी जूती पर टिकाया।"[6]

कथाकार कहानी की विषयवस्तु को स्पष्ट करने के लिए अन्य पात्रों को जोडता है। लक्ष्मी नारायण पटेल चतुर सिंह पहलवान और गाँव के वयोवृद्ध गणमान्य नागरिकगण। लेखक कहानी का आरंभ होली के त्योहार से करता है बच्चे सुबह से ही धमा चैकड़ी मचाते खेल का आनंद लेना आरंभ करते हैं। रंगों से रंगने के लिए भाभियों के पिछे पड़ जाते हैं। शांत और शर्मीले स्वभाव वालों के थोड़ा ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस दिन उनकी नहीं चलती। यह रंगों को त्योहार शर्मीलेपन और संकीर्ण विचारों को खात्मा कर सभी में प्रेमभाव भरता है। छोटे-बड़े का भेद समाप्त-सा हो जाता है।

विरासती सम्पदा से रहित जीवन जीने वालो सांवड्या को अपने कर्म पर भरोसा है। असली सौन्दर्य मेहनत पर टिका है।"उसके सांवले बदन में अनूठा सौन्दर्य झलकता था"[7]

यह कहानी आदिवासी ग्रामीण परिवेश और संस्कृति की जीता जागता चित्र प्रस्तुत करती है देशकाल व वातावरण का चित्रण स्पष्ट हुआ है। लेखक ने आंचलिक शब्दावली के

सहारे आदिवासी ग्रामीण परिवेश को उद्घाटित किया है जिसमें, जीवन की जटिलत परिस्थितियाँ से जुझते हुए आदिवासी मीणा सम्मान को उभारा है। 'गजब काआदमी था बोत्या' हरिराम मीणा की दूसरी कहानी है।

'बोत्या' अनाथ आदिवासी युवक है। जिसकी अपनी जिजीविषा है। कहानी की मूल पृष्ठभूमि इसी अनाथ जीवन की जिजीविषा के इर्द गिर्द घूमती है। कहानी का मूल पात्र सीधेपन के कारण विभिन्न प्रकार के शोषणों का शिकार होता है जैसे मनोदैहिक शोषण, साहूकारी महाजनी व्यवस्था द्वारा शोषण। यहां बोत्या के सहारे आदिवासी समाज की दुःख भरी दास्तान कही गया है। अपने ही विचारों पर चलने वाला बोत्या नई सोच को तरजीह दिए बीना ही सफल जीवन जीता है। दही में गिरी छिपकली निकालकर दही पी जाना वाली घटना आदिवासी समाज के गरीबी भरे जीवन का पर्दापाश करती है। दूसरी तरफ पत्नी का प्रसव खेत में बिना किसी की सहायता से करा देना महज सामान्य घटना नही बल्कि आदिवासी समाज की अशिक्षा, अन्य लोगों द्वारा किये अपमान और औरतों के प्रति देखे गये अन्याय और शोषण इसकी जड़ में है। कथोपकथन सीमित रूप में है संवाद कम है पर जो है यह बहुत सटीक है-

"एक सांस में बोत्या ने दही राबड़ी से भरी थाली को खाली कर दिया और बचे हुए को अंगूलियों में पोंछकर खाते हुए बोला-दही में भरी छापकी सू (जहर) खो (फैले) हाँ जे गर्म दूध में पड़ती तो बात न्यारी होती।"[8]

ऋतुचक्र से जुझते राजस्थानी प्रदेश में वर्षों से जड़ जमाए जल संकट का भी वर्णन किया है। जिस के लिए सरकार द्वारा कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए।

आँचलिक व तत्सम शब्दावली का प्रयोग करते हुए लेखक ने अपनी कहानी में कहावतों का यथा स्थान प्रयोग किया।

दीपावली के दिन पटकों की आग से उसकी मौत हो जाती। स्वयं अनाथ था अब अपने परिवार को भी अनाथ कर चल बसा था बोत्या। आदिवासी समाज में गरीबी अपना पूरा दमखम दिखाती है। तो दुर्भाग्य की अपना पूरा साथ निभाता। यही सच्चाई है आदिवासी समाज की।

हरिराम मीणा ने दो लघु कथाओं का भी सृजन किया है। जिनकी नाम 'सबूत' और 'जवाब' है। सबूत लघुकथा में आदिवासी विस्थापन का दर्द झलका है। दर्द के साथ एक सवाल भी खड़ा करता है। कि न्याय भी इतना पंगु क्यों हो जाता है। यह कहानी तथाकथिक समृद्ध कहलाने वाले और न्यायपालिका पर सवाल खड़े करती है कि वास्तव में मालिकाना हककिसका? जिसके पास स्याही से लिखे चंद कागजी टुकडे है उसका? अथवा जो पुरखों से वृक्षों पत्थरों को जानता पहचानता आया है उसका?

क्या लिखित में दस्तावेज न होने की वजह से आदिवासियों को भूमि से बेदखल किया जाना उचित है? यह कहानी भूमि बेदखली और भावनात्मक रूप से प्रताड़ित कर उनके शोषण को प्रर्दापाश करती जो आरंभ लेकर आजतक जारी है।

दूसरी लघुकथा 'जवाब' अंग्रेजी हुकूमत के जंगल और आदिवासी विरोधी नितियों को संदर्भ में लिखी गयी है। जिसमें अंग्रेज नीतियाँ बनाकर आदिवासीयों को भूमि से बेदखल करना चाहते है। जिसका आदिवासी जन पुरजारे विरोध करते है। एक ब्रिटानी अधिकारी द्वारा सवाल पूछने पर गजब का जवाब मिलता है।

"अगर तु प्यासा है तो पानी पिलाऊँगा, यदि भूखा है तो रोटी का इंतजाम करूंगा, और थका हुआ है तो मेरी यह चारपाई आराम करने के लिए दूंगा, लेकिन पहले यह बता कि मेरी ज़मीन पर खड़ा होकर मुझसे नाम पूछने वाला तु कौन है।"[9]

'आदिवासी लोक की यात्राएँ' पुस्तक में लेखक की खोजी यात्राएँ है। आदिवासी 'पुण्यभूमि' के झारखंड महाराष्ट्र, छतीसगढ़ और दक्षिणी भारत के तेलंगाना, आंधप्रदेश व मध्यप्रदेश, गुजरात व राजस्थान के आदिवासी स्थलों के भ्रमणमय खोजों का लेखाजोखा है। नीलगिरी पर्वत-घाटियाँ जो दक्षिण भारत की शान है। अंडमानी टापू के निवासी जो सदियों से उपेक्षित-से रहे।

अंडमान और निकोबार के बारे में काफी रहस्यों का उद्घाटन दिया गया। वहाँ के जीवन और दर्शन को शब्दों में बांधा है। वहाँ निवास करने वाले आदिवासी समुदायों के बारे में रोचक तथ्य लोगों के समक्ष पेश किऐ हैं।

"नांगिला तो लुप्त ही गये, जारवाओ की संख्या 320, ग्रेट अंडमानी 54, औग 94 एवं सेटेनली 112 बताये जाते है।..... सेंटेनली लोगों के साथ बाहरी लोगों का सम्पर्क अभी भी नहीं के बराबर हैं।"[10]

बेगा आदिवासी समुदाय के विभिन्न नामों से अभिहित हुए बताते है कि इनकी लोक संस्कृति बढ़ी विचित्र है। जिसमें 'करमा' सबसे रंगीला वे लोकप्रिय नृत्य है। यहाँ 'वेरियर एस्विन' और एसी.सी. दुबे के बारे में बताया कि उन्होंने बैगा आदिवासियों के सामाजिक गीत व नृत्य का संकलन किया।

बनजारा समाज रायसीन पहाड़ी के मालिक हुआ करते थे आज भी इसी संदर्भ में संघर्ष करते है लेकिन मीडिया व इतिहास में इसे खुली जगह नहीं मिली। यहाँ लेखक अंग्रेजी सरकार के विस्थापन के रवैय को स्पष्ट करते हैं। यहाँ पर 'धूणीतपे तीर' की घटना का भी उल्लेख करते हैं।

मध्यप्रदेश के आदिवासी समुदाय के 'टट्या मामा' का भी उल्लेख किया हुआ अंग्रेजी सरकार व भीला समुदाय का संघर्ष का जिक्र यहाँ हुआ है। पौराणिक कथा कोजोड़कर

चेंचू आदिवासी समुदाय का ब्योरा प्रस्तुत किया है। आखेट व पारम्परिक जीवन शैली में जीते ये लोग द्रविड़ भाषा से संबंध रखते है।

गरासिया समुदाय राजस्थान के दक्षिणी व दक्षिणी पूर्वी हिस्सों में बहु संख्या में मिल जाता है। इनकी दशा अभी भी बड़ी शोचनीय है। गरीबी भरा जीवन जीने के उपरान्त भी कुदरत के कारनामें सामने आने है? वह कारनामें गरासिया लड़कियाँ का सौन्दर्य। इसी कारण कई होटलों पर स्वागतकर्ता के रूप में खड़ी मिल जाती है।

"गरासियाँ लड़कियाँ गोरवर्णा व सुन्दर होती है इसलिए कई उच्च श्रेणी के हरिटेज रिसोर्टस में मैंने उन्हें तिलक का सामान व फूल मालाएँ लिए खड़ा देखा। पूछने पर बताया कि पर्यटकों, खासकर विदेशी अतिथियों को आकर्षित करने के लिए इन्हें स्वागत के लिए रखा जाता हैं।"[64]

आदिवासी समुदाय की घोटुल संस्कृति पर विचार-विमर्श किया है। साथ ही गोंडी भाषा के प्रति प्रेम और शोध रूचि का उल्लेख किया है।गोंड़ विशेषज्ञ क्रिस्टोफ वार्न हेमेंडोर्फ का जिक्र किया।

'मीणा' सामाज के गण चिह्न व उसके प्राचीन ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख किया है। मीणा शब्द मूल संस्कृत के 'मीन' से निकला है जिसमें राजस्थानी भाषा के प्रभाव से न का उच्चारण 'ण'में होता है। मीन का एक अर्थ 'मछली' भी होता है इसलिए इनका गण चिह्न भी यही है।

आदिवासी समुदाय के प्रखर चिंतक शिक्षाविद् लेखक व संस्कृति कर्मी बिरसामुंडा के विचारों का उल्लेख किया। जिन्होंने आदिवासी समाज के लिए संघर्ष किया।

सहरिया समुदाय विशेषकर राजस्थान के शाहबाद कस्बे में निवास करते हैं। इनका सबसे बड़ा मेला केलवाड़ा के सीताबड़ी स्थल पर भरता है। मान्यतानुसार यहाँ सीता ने वनवास का समय यहीं बिताया था।

यह समुदाय भील समुदाय से भी अपना संबंध जोड़ता है। कहीं-कहीं पर 'रामायण' की पात्र 'शबरी' से भी संबंध जोड़ते है।

'जंगल-जंगल जलियावाला' यात्रा वृतांत तीनों अध्यायों में विभक्त है। इसमें पहला अध्याय 'मानगढ' नाम से है। जिसमें लेखक की यात्रा जयपुर से आरंभ होकर अजमेर पाली, सिरोही होती हुई उदयपुर पार बाँसवाड़ा के स्थल 'मानगढ़' पर पूर्ण होती है। यहाँ दक्षिणी राजस्थान के राजनैतिक, ऐतिहासिक व लोकधर्मी तथ्यों उल्लेख हुआ है। प्रकृति के विहंगम दृश्यों का ब्यौरा प्रस्तुत करते-करते मानगढ़ धाम के स्वतन्त्रता सेनानी के पौत्र नाथू लाल जी मिले। जिन्होंनेमानगढ़ हत्याकांड के संबंध में जानकारियाँ दी और वह साफा दिखाया जिस पर गोलियों के निशान बने हुए थे। लेकिन वे बच गए। लेखक के भावभरे आग्रह पर गोविन्द गुरु का एक गीत सुनाया जिसे वे स्वयं गाते थे-

"मानगढ़ नी माटी नो मोल भूल नखे
देश की आजादी
हारू शहीद थई गया हजारों आपणा भाई
ई मगतर पूनम नो दिवास भूलों नखे.....।''[12]

दूसरे अध्याय का नाम'भूला-बिलोरिया' रखा है। जिसमें मानगढ़ हत्याकांड के संबंध में लेखक ने कई सवालों का उत्तर जानना चाह इस हेतु भ्रमण किया का उसी का उल्लेख यहाँ है। वहाँ के लोगों से मिले उनसे बातचीत की। इसके साथ सरकारी रिपोर्टों की खोज की जिनमें इनसे संबधित तथ्य मिल सके। लेकिन कोई विशेष तथ्य उपलब्ध नहीं हुए। मेवाड़ भील कोर के मुख्यालय से कुछ तथ्य हाथ लगे। जिनका उल्लेख परमानेंट आर्डर बुक में था।

"Copy of letter No.606 dated mount Abu, the 8th June 22 form Major H.R.N. prichard G.B.C. Secretary to the Agent to the Governer General in Rajputana to the Commandant Mewar Bil Corps, Kherwara."[13]

तीसरा अध्याय 'पालचित्तरिया' नाम से है जिसमें गुजराती धरती पर 'मानगढ़' की तरह ही आदिवासियों ने अंग्रेजी सरकार से लोहा लिया और वीर गति को प्राप्त हुए। पालचितरिया में सरकारों ने अपने-अपने निजी हितों को ध्यान में रखते हुए अलग स्मारक और शहीद दीवार बनवा दिए। पालचितरिया के निकट एक स्थल है 'लक्ष्मणपुरा का दहवाड़ा'। जहाँ पटेलों के खेत हैं। जहाँ पर अंग्रेजों व रियासतों ने मिलकर आदिवासियों का नरसंहार किया था।

"हाँ यही वो जगह है, जहाँ मिनख मराई हुई थी।"[14]

पालचितरिया में एक आन्दोलन के प्रणेता मोतीलाल तेजपाल का प्रभाव पड़ा। लेकिन यहाँ इस इलाके को सही संभालने वाले थे मंगला जी। यहाँ विभिन्न कुए होने की जानकारी भी मिली। जिनकों अब रेत से भर दिया गया। पूछने पर वहाँ के लोगों ने कुछ नहीं बताया। इसका कारण आदिवासियों की लाशों को डालकर दफना दिया ताकि इस घटना के कोई सबूत ही न बचे।

"कुए तो दर्जन भर बताए जाते हैं, जिनमें लाशों को डालकर ऊपर से मिट्टी डाल दी गई थी ताकि कोई नामों निशान न बचे।"[15]

इस हत्याकांड में अन्य स्थलों के आदिवासी पाल जागीर के अलावा अन्य स्थानों के आदिवासी सम्मिलित थे। उदयपुर के भौमट क्षेत्र बलीचा, छाणी, बोमटावला इत्यादि गाँव सम्मिलित थे। इसका कारण आदिवासी चाहे जिस स्थान पर के निवासी हो उनके साथ एक ही व्यवहार किया जाता है। चाहे वे राजस्थान हो गुजरात हो अथवा, मध्यप्रदेश के अथवा भारत के किसी अन्य भू-भाग के।

वहाँ के लोग इस संबंध बात करना भी पसन्द नहीं करते इसके पिछे कोई न कोई कारण है? लेखक ने कारणों का उल्लेख दिया।

"1. सबसे बड़ा कारण हताहत होने वाले वंशजों में इस घटना का खौफ है।

2. ...जमीन में मानव अस्थियाँ मिली, जिन्हें रफा दफा करना उचित समझा ताकि वहाँ बनाने वाले मकानों के बारे में उल्टी सीधी बातें न फैले।

3. इस घटना का अधिक प्रचार हुआ तो यह सम्पूर्ण क्षेत्र राष्ट्रीय बलिदान की दृष्टि से सुरक्षित घोषित करा दिया जाएगा।"[16]

पाल चितरिया के इस आन्दोलन के जनक थे मोतीलाल तेजावत जिनका जन्म 8 जुलाई, 1887 को वर्तमान राजस्थान के तत्कालीन उदयपुर राज्य में कोलियारी गाँव के ओसवाल परिवार में हुआ। हिन्दी, ऊर्दू, गुजराती भाषाओं का ज्ञान प्राप्त तेजावत ने भील समुदायों जनजागृति लाने हेतु हमेशा प्रयास किया और एक आन्दोलन आन्दोलन चलाया। ताकि वे अपने अधिकारों के जागृत हो सके वास्तविक मनुष्य का जीवन जी सके। लेकिन अंग्रेजी सत्ता ने देशी रियासतों के साथ मिलकर आन्दोलन को कुचल और उन्हें काफी समय बाद भी आत्मसर्पण करना पड़ा।

'साइबर सिटी से नंगे आदिवासियों तक' हरिराम मीणा का यात्रावृतांत है। इसमें लेखक दिल्ली हैदराबाद और सुदूर अंडमानी द्विप समूह से निवास करने वाले आदिवासियों तक की यात्रा का वर्णन है। एक तरफ विकास के दावे और चकाचैंध में भागती जिंदगी और दूसरी तरफ तथाकथिक कहे जाने वाले विकास से ओझल जीवन जीने वाले आदिवासी जीवन का उल्लेख हुआ है।

दिल्ली हवाई अड्डे से लेकर हैदराबाद की यात्रा और वहाँ के दर्शनीय स्थलों का ब्यौरा दिया है साथ ही हैदराबाद का नया नाम 'साइबराबाद' होने का संकेत किया। इसकी व्याख्या मानवीय व्यवहार के साथ जोड़कर समझाया। मुहम्मद कुतुब कुली शाह और

भागमती के अमर प्रेम कहानी के माध्यम से साम्प्रादायिक सद्भावना का उदाहरण पेश किया। इन्हीं प्रेम संबंधों के कारण कुतुब शाह उर्दू के पहले धर्म निरपेक्ष कवि और शायर बन गए।

"कुफर रीत क्या होर और इस्लाम रीत
हर एक रीत में हैं इश्क का राज।"[17]

विशाखापटनम् और उवके निकट स्थलों की जानकारी दी। वहाँ का मौसम वहाँ की हरी भरी घाटियाँ, खूबसूरत वृक्ष आदि का परिचय दिया है। वहाँ यातायात और उस विभाग से संबधित कर्मचारियों के व्यवहार और कार्य कला का भी उल्लेख किया है।

भुवनेश्वर के मंदिर और तक्षण कला से सजित प्रतिमाओं का उल्लेख हुआ है। जिनमें काम सूत्रीय भंगिमाएँ भिन्न-भिन्न आयु के सौउदेश्य से बनायी जान पड़ती है। संगीत और वाद्य यंत्रों के आलिंगन मुद्राओं का ब्यौरा प्रस्तुत किया। जो उस काल की सामाजिक व्यवस्थाओं का चित्रण करती है।

भारत की चार प्रमुख पीठों के साथ जगन्नाथ पुरी का नाम भी आता है। जिसमें फैली भावनात्मक हिंसा का उल्लेख हुआ है। वहाँ के पूजारियों द्वारा बंगाली परिवार के साथ की गयी हरकतों का चित्रण हुआ है।

भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण घटनाओं में सम्मिलित है कलिंग युदध। जिससे सम्राट अशोक का हृदय हमेशा के परिवर्तित हो गया, का उल्लेख हुआ है।

कलकाता की भीड़ भरी रेलवे स्टेशन और कुलियों के रोजगार के सबंध में चर्चा की गयी। कलकता में अंग्रेजी सरकार द्वारा की गयी सांस्कृतिक घेराबंदी का चित्रण हुआ है। आज के भागते जीवन में किसी के पास नैतिक-अनैतिक, धर्म, दर्शन, सामाजिक दशाओं और उचित अनुचित पर बात करने का समय नहीं है। बाजारवाद का खुला चिट्ठा पेश किया।

नौजवान लड़के-लड़कियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कुछ भी गलत नहीं।यौन शुचिता का तो प्रश्न ही नहीं रहा। जबकि पत्नी सुशील हो और पति पैसा वाला होवाली धारणा भी जन्मी।

पंड़ो की गुंडागर्दी और जगह-जगह लोगों को मानसिक रूप से गुलाम करने की योजना का जिक्र भी आया है।

"मैंने मन में सोचा तुम जैसे लोगों कि तो इस देश में सदियों से मानसिक स्तर पर समझ और युनियन है ही।"[18]

पोर्टब्लेर से सेल्युलर जेल का उल्लेख किया। जोली बाय टापू का भी उल्लेख किया गया। इसके नजदीकी स्थलों पर विभिन्न प्रकार की वनस्थतियों को चित्रण किया गया। घने जंगलों से घिरा यह टापू विभिन्न प्रकार के पक्षियों और समुद्री जीवों का भी उल्लेख हुआ है।

सरदार बख्तावर सिंह जिन्होंने अपने नौकारी काल में आदिवासी समुदायों के मध्य समय दिया।इन्हें नजदीक से देखा समझा। उन्हीं पर बनी फिल्म 'मैन इन सर्च आफ मैन' में नंगे ओंग आदिवासियों के साथ नृत्य भी किया। अंग्रेजी फोजों ने इन्हें खदेड़ा, उनकी संस्कृति को नष्ट किया।उनका शोषण किया। जंगलों को निर्दयतापूर्वक नष्ट किया। यहाँ सभी का चित्रण बेखूबी से हुआ है।

'ऐन' और 'चाइला' की शादी और जीवन का उल्लेख कर बताया गया कि यदि आदिवासी लोगों को आधुनिक जीवन शैली में ढालने की कोशिश करेंगे तो व उनकी आयु-सीमा कम हो जायेगी। जिसका उदाहरण स्वयं 'एन' है।

पूर्व मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य कला के बेजोड़ उदाहरण है महाबलीपुरम के मंदिर है। जिन्हें चट्टानों से काटकर बनाया गया है। जवान होती लड़कियों को देवदासी परम्परा नारी

शोषण का अंतिम बिन्दू था। इन्हीं इनकी नृत्य कलाओं में इनका कला नहीं बल्कि वेदना भरी आहें छटफटाहट भरती है लेकिन परिणाम विहिन। यहाँ देवदासी प्रथा का ऐतिहासिक विकास क्रम भी बताने का प्रयास किया लेखक इनकी दशा को समझकर कलकता के 'रेट लाइट एरिया' को याद कर लेते हैं।

यात्रावृतांत का अंतिम भाग चैन्नई से शुरू हो कर हैदराबाद के सफर के दौरान खत्म होता है। यहाँ सपेरों के माध्यम से हर स्थिति में विकल्प खोजने पर जोर दिया। अतः कह सकते है कि आदिवासियों को आसियानों को उजाड़ते समय का उनके निवास हेतु विकल्प होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. www.prideofpinkicity.com
2. वही
3. वही
4. मीणा, हरिराम, धूणी तपेतीर साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2013, पृ0 25
5. वही पृ0 375
6. मीणा, केदार प्रसाद, आदिवासी कहानियाँ, अलख प्रकाशन, जयपुर, सन् 2013, पृ0 31
7. वही पृ0 40
8. मीणा, हरिराम, गजब का आदमी था बोत्या, अप्रकाशित कहानी,पृ0 04
9. मीणा, हरिराम, जवाब (लघु कथा) अप्रकाशित कहानी,पृ0 4
10. मीणा, हरिराम, आदिवासी अंचलों की यात्रा,शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली,सन् 2014, पृ0 19
11. वही, पृ0 64
12. मीणा, हरिराम, जंगल जंगल जलियावाला, शिल्पाय प्रकाशन, दिल्ली, सन् 2013, पृ0 20
13. वही, पृ0 57
14. वही, पृ0 84
15. वही, पृ0 84
16. वही, पृ0 80
17. मीणा, हरिराम, साइबर सिटी से नंगे आदिवासियों तक, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली सन् 2012, पृ0 24
18. वही, पृ0 53